प्रथम अध्याय
प्रथम अध्याय

प्रस्तावना

दक्षिण एशिया का विकास हुआ सुरक्षा वातावरण दिन-प्रतिदिन जटिल होता जा रहा है। यदापि इस क्षेत्र में महाशक्तियों के मध्य चल रहा शीत युद्ध समाप्त हो चुका है, किन्तु कई अन्य ध्वंस अपने शाक्ति विवार में संलग्न है, जिनकी गतिविधियों से निश्चित रूप से स्थिति विस्फोटक हुई है। दूसरी ओर विश्व की धूलीय शाक्ति अमेरिका एशियाई सम्मोहन को लेकर इस क्षेत्र के राष्ट्रों पर अपना वर्चस्व बनाए रखना चाहता है। शाक्तिशाली सोवियत संघ के पतन के बाद चीन का प्रभाव दक्षिण एशिया में काफी बढ़ा है। विघटन से पूर्व सोवियत संघ सुरक्षा की दृष्टि से संतुलन का आयात करता था। सोवियत संघ के पतन से जहाँ दक्षिण एशिया में भारत की स्थिति कमजोर हुई है, वहीं अब इस क्षेत्र में चीन की शक्ति को चुनौती देने वाली कोई शक्ति नहीं रही। परस्पर विवाद के अभाव में दक्षिण एशियाई राष्ट्र अपनी शक्ति का विवाद कर रहे हैं। पाकिस्तान, चीन और अमेरिका के व्यापक कूटनीतिक व वैश्विक सहयोग से भारत के प्रति विरोधी रूख अपनाए हुए हैं। यह भारत को विकास प्राप्त करने की प्रायास कर रहा है। पाकिस्तान की इन गतिविधियों से सम्पूर्ण दक्षिण एशिया में भ्रष्ट व तनाव व्याप्त है।

दक्षिण एशियाई देशों की सामाजिक व आर्थिक स्थिति में सुधार हेतु आवश्यकता है- शान्ति और स्थायित्व की, न कि राशियाँ की खरीद फरोख्स की।' दक्षिण एशिया का महत्व उसकी आर्थिक व सैनिक शक्ति पर निर्भर करता है। इस दिशा में भारत का उत्तराधिकार व योगदान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। वर्तमान समय में भारत पड़ोसी देशों की सभी आर्थिक व सैनिक आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता। ऐसी स्थिति में दक्षिण एशियाई देश बड़ी शक्तियों की ओर छुड़करे ही। जब तक ये देश क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग और क्षेत्रीय सामूहिक सुरक्षा को नहीं स्वीकारते, तब तक सुदृढ़ स्थिति की आशा नहीं की जा सकती।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद दक्षिण एशिया देश एक-एक कर तेजी से ब्रिटिश उपनिवेशवाद से मुक्त होते गए। 1947 में इस उपमहाद्वीप में पाकिस्तान के जन्म ने द्वितीय विश्व युद्ध में विजयी शक्तियों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया। किन्तु पड़ोसी देश आंग्लिकाना के लिए

1. इण्डिया व्यूज ऑन र सिंचुएल्याण "प्रधानमंत्री श्रीमती इंद्रानी गांधी के साक्षात्कार में प्रतिक्रियाएँ गई व्यक्तित्व (अक्टूबर 1981)" भारत सरकार द्वारा आकर्षित एवं प्रकाशित, नई दिल्ली, पृ. 90-91
2. गुजरात इन्द्र कुमार, "विश्वास के आह्लाद में आंग्लिकाना-संयुक्त राष्ट्र संस्थापन एक प्रकार है", दिनांक साप्ताहिक, 12-18, अगस्त 1984, पृ. 36-37
(क) दक्षिण एशिया के देश व उनका महत्व

भारत एशिया महाद्वीप के दक्षिण में स्थित एक विशाल देश है। वह विशालता की दृष्टि से पाकिस्तान से चार गुणा बड़ा है। जनसंख्या की दृष्टि से बंगाल देश से आठ गुणा अधिक है और सम्पूर्ण दक्षिण एशिया का तीन गुणा भाग है। 1 भारत की सीमाओं पर पाकिस्तान, अफगानिस्तान, रूस, नेपाल, चीन, बर्मा, बूटान, बंगालदेश व श्रीलंका स्थित है। भारत का सामारिक महत्व इसलिए भी अधिक है क्योंकि यह जल मार्ग द्वारा विश्व के सभी महाद्वीपों से जुड़ा है। 10 मार्च, 1950 को लोकसभा में भाषण करते हुए पं. नेहरू ने कहा था कि हम एशिया के सामारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण भाग हिंदुस्तानागर के मध्य स्थित हैं। अतीत व वर्तमान में भारत सम्पूर्ण एशिया से जुड़ा है, इसलिए भारत उनकी समस्याओं व उनके प्रकरणों को अनेक नहीं कर सकता। 2 जबकि अफगानिस्तान एशिया का दूसरा छोटा देश है। अपनी भौगोलिक स्थिति व रूस से बड़ी सीमा से जुड़ा होने के कारण उसने इस क्षेत्र के इतिहास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। 3 किन्तु समुद्री मार्ग पर उसका अधिकार न होने के कारण वहाँ परराष्ट्र निर्भरता बनी रही है। अतः वह दक्षिण एशिया में अपनी स्थिति को देखते हुए एशियाई देशों में परस्पर विवादीय स्थिति उठाता है। भारत की सीमा पर चीन दक्षिण एशियाई देशों में चीन व पाकिस्तान शाक्तिशाली देश है, किन्तु उनसे भारत के दृश्य दृष्टिकोण सम्बन्ध है। अन्य देश नेपाल, बूटान, बंगालदेश, मालदीव, श्रीलंका, बर्मा एवं अफगानिस्तान से भारत के सम्बन्ध सामान्य व मध्यर है।

चीन

चीन विश्व का सबसे बड़ी जनसंख्या वाला तथा प्राकृतिक साधनों से सम्पन्न देश है। 1949 में सामयिकी शासन व्यवस्था स्थापित हो जाने के परिचालन चीन में एक शक्तिशाली केंद्रीय सरकार की स्थापना हुई। विश्व के इस महत्वपूर्ण क्षेत्र के प्रतिनिधित्व एवं भारत के समता सरकार

3. गुप्तराज इंद्र कुमार, "इतिहास के आर्तस में अफगानिस्तान-संबंध उपरिधित एक पक्षीय नहीं है", टिमान सावारा, 12-18, अगस्त 1984, पृ. 36-37
4. गुप्ता, भवनी सेन, "साउथ एशिया, द विग चैंडर सैंड्वॉड", इंडिया टूडे, खण्ड 9, अंक 8, अप्रैल 16-30, 1984, पृ. 122, 27
5. नेहरू, जबाहरलाल, "इंडिया जाफ फारीन पॉलिसी सिलेक्टेड स्टीट्ज", सितंबर 1946-अप्रैल 1961 (नई दिल्ली 1963) पृ. 22
- अमायादान, इंदिरा राजन, "फारीन पॉलिसी एण्ड रिलेशन्स", दिल्ली 1985, पृ. 10
6. आर्चबार्ट, (पट्टा) 5 मार्च, 1978
पाकिस्तान

धार्मिक कट्टरता, मुस्लिम नेताओं के स्वार्थ व ब्रिटेन की 'फूट डालो राज्य करो' की नीति का परिणाम ही पाकिस्तान का निर्माण था। भारत विभाजन ने स्वाभाविक रूप से कुछ ऐसी समस्याएं दैद की, जिससे स्पष्ट हो गया था कि दोनों देश मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का निर्माण नहीं कर सकते। इस प्रकार दोनों देशों के मध्य द्वे व मनमुंद इतिहास या ब्रिटेन को देन है। श्रेष्ठता की दृष्टि से पाकिस्तान भारत का एक बौंधाई और आबादी को दृष्टि से आठवां हिस्सा है, फिर भी पाकिस्तान का रक्षा ख़र्च भारत से आया है। जो कि अनुपात की दृष्टि से किसी भी कोण से उचित नहीं है। वह तीन बार भारत से युद्ध कर चुका है, किन्तु सफल नहीं हुआ। पाकिस्तान को दक्षिण एशिया में शक्तिशाली संयुक्त बनाए रखने में परिवर्तनीय देशों, अमेरिका, चीन व कुछ मुस्लिम देशों का सम्बन्ध प्राप्त है। दक्षिण एशिया में चीन व पाकिस्तान की गतिविधियां तथा भारत के साथ उसके सम्बन्धों का विस्तृत विवरण आगामी अवधार्यों में किया गया है।

बंगला देश

बंगला की खाड़ी में स्थित, इस महत्त्वपूर्ण देश का निर्माण ही भारतीय सहयोग व पाकिस्तान के विभाजन से हुआ था। इसलिए इस छोटे देश को भारत के प्रति कोई दुर्भावना नहीं रही। बंगलादेश के साथ हमारे द्विपक्षीय सम्बन्धों में और खास तौर पर आर्थिक सहयोग के क्षेत्र

7. श्रीवास्तव, डा. 10 एलएस, बी.पी. जोशी, “अंतरराष्ट्रीय सम्बन्ध”, मेध 1983, पृ. 119-123
8. कुमार, सतीश, “चीन का बढ़ता दायरा” नवभारत ताइम्स, 21 मार्च, 1995
9. श्रीवास्तव, राजेंद्र क., 7, पृ. 168
10. कुमार, रंजीत, “तूफान से पहले का सनातना” नवभारत ताइम्स, 4 दिसम्बर, 1994
में निर्लल सुधार हुआ है। किन्तु कुछ लम्बे समय से चली आ रही समस्याएं बनी रही; जैसे फरकका में जल प्रवाह को बढ़ाने, बंग्लादेश के निकटवर्ती भारतीय प्रदेशों में बंगाली लोगों का बढ़े पैमाने पर घुस आगा और भारतीय नागरिकों की समस्या से समन्वित दाओं के समाधान का प्रसन आदि।

नेपाल

दक्षिण एशिया में सुरक्षा की दृष्टि से नेपाल भारत की सीमा का महत्त्वपूर्ण प्रहरी है। दोनों देशों के बीच भाग्योत्साह, सांस्कृतिक समानताएं हैं। तत्कालीन कम्युनिस्ट सरकार की स्थापना के परिचालन वाली चीन की गहरी रूढ़ि भारतीय हितों के प्रतिकूल प्रतीत होती है। चीन के प्रभाव से बचने के लिए भारत भूरे रंग का राष्ट्र नेपाल की विभिन्न क्षेत्रों में मदद करता रहा है, जैसे- कृषि, जलवायु विश्लेषण, बांध परियोजनाओं, तथा दैनिक उपयोग की विद्युत राष्ट्रों की रियायाती दरों पर उपलब्ध कराना आदि। पारस्परिक सम्बन्धों की दृष्टि से तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती मनमोहन अधिकारी ने भारत यात्रा पर बताया कि नेपाल अपनी धारती से भारत विरोधी गतिविधियों नहीं चलने देगा, चूँकि नेपाल में विशाल देश भारत से घबराकर उसकी नीतियों के प्रति विरोधी अभियान भी समय-समय पर चलते रहे हैं।

भूटान

भूटान दक्षिण एशिया में बसा व भारत की सीमा से लगा ऐसा पड़ोसी है जिसके साथ सम्बन्धों में प्रतिक्षा-कम जोड़ा तनाव नहीं आया। नेपाल की तरह ही भूटान के साथ भी भारत परस्पर सुरक्षा-बुझ व सदभाव के साथ सहयोग के क्षेत्रों में विस्तार की कोशिश करता रहा है। भूटान के विकास कार्यक्रमों में प्रचुर सहयोग व अन्य उपयोगी सामग्री देता है। भूटान की सांस्कृतिक अवस्थिति का लाभ उठाने के लिए चीन ही नहीं, अमेरिका, रूस तथा अन्य समुद्री राष्ट्र भी लाठापित हैं। यदि भूटान को एकदम खोल दिया जाए तो वह भारतीय सुरक्षा के लिए खतरनाक सिच हो सकता है। लेकिन एक सांस्कृतिक राष्ट्र को, जो कि संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य है, भारत एक सन्धि के आधार पर कितना नियंत्रित कर सकता है, यह प्रसन भी विचारणीय है।

11. बार्बीक रिपोर्ट, 1983-84, भारत सरकार द्वारा आक्षेपण व प्रकाशित, पृ. 4-5
12. कुमार, सतीश, देखिए क्र. 8
13. वैदिक, वेंक प्रताप, "भारतीय विदेश नीति, नए दिशा संकेत", (दिल्ली 1980), पृ. 35-36
14. बार्बीक रिपोर्ट, 1983-84, पृ. 5-6
श्रीलंका

हिन्द महासागर के सिनारे तथा भारतीय सीमा पर बसे देश श्रीलंका का रूख भारत के प्रति योग: अनुकूल नहीं रहा। किन्तु जब से श्रीलंका ने स्वयं को गुटनिरपेक्ष घोषित किया, भारत से उसके सम्बन्ध सामान्य होते गए। पर श्रीलंका अपने मन से यह डर नहीं निकाल पाया कि भारत उसे निगाल जाएगा। 15 इसका प्रयास यह है कि श्रीलंका, भारत से साथ हिप्पशीय आर्थिक सहयोग के बजाय बहुपक्षीय या एशियाई साझा बाजार के अन्तर्गत आर्थिक सम्बन्धों को बढ़ाने पर जोर देता है। 16 किन्तु विशेष में हो रहे परिवर्तन के दौर में तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती चन्द्रिका कुमार तुंगे ने भारत के साथ अनेक सम्बन्धों का प्रस्ताव रखा है। खुले बाजार व्यवस्था के तहत उन्होंने भारतीय व्यापारियों को श्रीलंका में महत्वपूर्ण क्षेत्रों में निवेश के लिए आमंत्रित किया है। किन्तु यह सत्य है कि भारत में श्रीलंका के साथ सम्बन्धों को प्राय: रंगी की दृष्टि से देखा जाता रहा है क्योंकि दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय संगठन व अन्य महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर श्रीलंका का रूख पाकिस्तान की ओर बुकता प्रतीत होता है।

मालदीव व बम्बई

भारत की सीमा पर स्थित छोटा-सा देश मालदीव अधिकारित: भारतीय सहयोग व सहायता पर निर्भर है। उनके बीच राजनीतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक सम्बन्ध रहे हैं। दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन के अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों में मालदीव व भारत ने निकट सहयोग से कार्य किया है। 17

पहली बम्बई से भी भारत के सम्बन्ध पर्याप्त मैत्रीपूर्ण और सहयोग के बने रहे हैं। इन सम्बन्धों को और अधिक उदारीकरण की आवश्यकता है। किन्तु इसकी स्थापना के भरोसे ही बम्बई से अधिक भारत पर है। 18 भारत अपने इन छोटे ठंडी देशों के प्रति सममता मूलक और उद्देश्यपूर्ण निर्माण सहयोग करता रहा है।

इस प्रकार हिमालय की ओर से भारत की सुरक्षा की दृष्टि से जहाँ नेपाल, बम्बई व भूटान का विशेष महत्व है वहीं जल मार्ग को ओर से बंगाल देश व श्रीलंका की महत्वपूर्ण स्थिति का अन्देखा नहीं किया जा सकता। अन्त में, यह सत्य है कि अपनी भौगोलिक व सांस्कृतिक स्थिति के कारण भारत दक्षिण एशिया का प्रजातन्त्र स्थापना है तो इस क्षेत्र में अफगानिस्तान के

15. वैदिक, देखें क्र. 13. प. 33-34
16. टाइम्स ऑफ़ इंडिया, 5 अप्रैल, 1978
17. वैदिक रिपोर्ट, 1983-84, विवेक भारत, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित, पृ. 8
18. वैदिक, वेद प्रताप, "भारत-बम्बई सम्बन्ध तथा आयामों की खोज", नवभारत टाइम्स, 18 अगस्त, 1977
महत्त्व को भी अस्वीकार नहीं जा सकता। दोनों देश विचारों व विश्वास के मजबूत बन्धन में बंधे रहे हैं।

दक्षिण एशिया में बड़ी शक्तियों की राजनीति

दक्षिण एशियाई राजनीति में भारत, पाकिस्तान, चीन, अमेरिका तथा रूस, इन पांचों देशों के प्रमुख हित रहे हैं। स्वतंत्रता से पूर्व दक्षिणी एशियाई राजनीति में ब्रिटेन के साथ-साथ रूसी गवर्नमेंटों भी जारी रही, किंतु दिल्ली दिव्य विश्व युद्ध के अपराध्य रूस के अतिरिक्त अमेरिका का विश्व राजनीति में प्रमुख शक्ति के रूप में पदार्पण हुआ। ये महाशक्तियाँ अपने-अपने स्वार्थों के लिए दक्षिण एशिया को बीच में लग गईं। पाकिस्तान ने, जिसका प्रारम्भ से ही पश्चिमी शक्तियों ने समर्थन किया था, इस क्षेत्र में शक्ति संघर्ष बनाए रखने के लिए" अमेरिकी सैन्य संगठनों; नाटो, सीएटो व सेंटो की सहयोगता ग्रहण कर ली। दक्षिण एशिया में अमेरिका का प्रभाव बढ़ रहा था। स्वाभाविक था, कि रूस अपने पद्धतियों अफगानिस्तान में उसका प्रभुत्व नहीं देखना चाहेगा।19 इसलिए सोवियत प्रधानमंत्री ने कहा कि वे अफगानिस्तान में साम्राज्यवाद को समाप्त करना तथा दक्षिण एशियाई क्षेत्र में शातिर्व व सुरक्षा का प्रयास करना चाहते हैं।20 इस प्रकार दक्षिण एशिया में अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए जहाँ एक और अमेरिका ने पाकिस्तान को चुना वहीं दूसरी ओर रूस ने उसके प्रभुत्व को समाप्त करने के लिए अफगानिस्तान को अपना मोहरा बनाया।21 जिससे दक्षिण एशिया में अब रूस और अमेरिका का एक समान लक्ष्य हो गया कि चीन के प्रभाव क्षेत्र को बढ़ाने से रोकना। इस नीति का प्रथम प्रयोग भारत पर किया गया। 1962 में चीन ने भारत की सीमा के बड़े क्षेत्र को हड़पने की दृष्टि से आक्रमण कर दिया, तैयारी न होने के कारण भारत की पराजय हुई, जिससे भारत की छवि को आधार लगा और चीन इस क्षेत्र में महान शक्ति बन गया। वह भारत की शक्ति को नियन्त्रित करने के लिए उसके पद्धतियों मित्र देशों पर अपना प्रभाव स्थापित करने का भी प्रयास करता रहा है। चीन की इसी नीति के फलस्वरूप अफगानिस्तान इस युद्ध में तटस्थ रहा। 'शानु का राजा' मित्र होता है', इसी आधार पर चीन-पाक मैत्री का सूत्रपात हुआ। इनकी आक्रामक नीतियों के कारण भारत अन्य दक्षिण एशियाई देशों के साथ मित्रता तथा रूस व अमेरिका दोनों से मदद

19. गुजरा, भारती संस, "र अफगान सैन्य, सैन्य दू लिख लिख सीवियल पावर", (हिंदी 1982), पृ. 113
20. चुंभ, सेरा, "अफगानिस्तान, र रोजन्त्व कैर इन्युएंटिंग डिस्टिंक्टिंग एक्सप्रेस", राउंड टेबल (280), अक्टूबर 1980. पृ. 422, 432-33
21. गुजरा, भारती संस, देखिए क्र. 19, पृ. 124-25
22. बहु, पृ. 145
1965 के भारत-पाक युद्ध के पश्चात, हुए ताराकंद राजनीति की समझोते द्वारा दक्षिण एशिया की राजनीति में रूस अपनी छवि बना चुका था। अफगानिस्तान ने क्षेत्रीय राजनीति में राजनीति को आधार मानते हुए इस समझोते की प्रशंसा की। अमेरिका ने दक्षिण एशिया से रूसी प्रभाव को समाप्त करने के लिए चीन को साथ आम सहमति कर ली। दूसरी ओर, चीन ने भी भारत को सबक सिखाने के लिए पाकिस्तान से गठबंधन स्थापित कर लिया। ऐसी स्थिति में विभिन्न समझौते द्वारा दक्षिण एशिया में राजनीति की आशा कैसे की जा सकती है? इस प्रकार, 1971 में बांग्लादेश के प्रस्ताव पर भी पाकिस्तान को चीन तथा अमेरिका की ओर से खुला समर्थन मिला। ऐसी स्थिति में भारत का इकाया रूप की ओर हुआ। यद्यपि अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन, कार्टर तथा एनरी कॉन्स्टर्ड दक्षिण एशिया में भारत को प्रमुख शक्ति रूप दिखाया करते थे। किन्तु रीमन प्रशासन को वुटिंट रूप से पाकिस्तान का कूट-योगदानस्वरूप महत्व अधिक रहा।

इस प्रकार दक्षिण एशिया में साम्राज्यवादी व विस्तारवादी ब्रिटिश नीतियों के कारण भारत विभाजन और पाकिस्तान के जन्म के साथ ही लित नई समस्याएं जन्म लेती रही हैं। आरोपण-प्रत्यारोपण के साथ ही समझौते भी होते रहे, लेकिन उनकी समस्याएं ज्यों की त्यो बनी रही। फिर भी भारत ने दक्षिण एशिया में राजनीति के प्रयास जारी रखे। 1972 में शिमला समझौता इसी का प्रतीक है। जिसके द्वारा इस क्षेत्र में राजनीति व स्थिरता की आशा की गई। बांग्लादेश के निर्माण के पश्चात, भारत-चीन राजनीति का लोहा माना जा लगा। साथ ही परमाणु विस्फोट, सिक्किम विलय से भारत की दक्षिण एशिया में गौरवपूर्ण छवि बनी।

ऊपर भारत दक्षिण एशिया को एक महान शक्ति है, इसलिए वह इस क्षेत्र में राजनीति, स्थायित्व तथा विकास चाहता है। उसका साधी अफगानिस्तान भी दक्षिण एशिया में गुटबंदियों से उत्तन तनाव व युद्ध का वातावरण समाप्त कर राजनीति व सहयोग का मुद्दा आधार बनाना चाहता है। किन्तु इन प्रयासों में अफगानिस्तान एक सीमित योगदान ही कर सकता है क्योंकि जब तक इस क्षेत्र में राजनीतिक समस्याएं जीतने हैं, क्षेत्रीय सहयोग की आशा कठिन कार्य है।

23. बर्नाब, बिलियम जे, “कार्टेट-मेरोरी इंडिया, इंडिया इन बंदल पालिकिस्तान”, एशिया 1968, (न्युयॉर्क) पृ. 13
24. काफुल टाइम्स, 11 अगस्त, 1966
25. बर्नर्ड, सबराता, “इंडिया अफगानिस्तान एण्ड व वर्ल्ड, ए स्टडी इन पस्पिंक्टन”, विश्वविद्यालय डेम्यूल, चेयर 13, एंड 3, फरवरी 1980, पृ. 24-25
26. अध्यायराम, राजन, देबिले क्र. 5, हिन्दुस्तान, 14 सितंबर, 1978
27. गार्लोट, एन.एसटो, “इंडिया एण्ड नान-एलाइंडरंट”, 7वीं राजस्थान पालिकिल साइंस फार्मर्स, 27-28 फरवरी, 1978, पृ. 37
28. बैंडर, बर्न प्रताप, “अफगानिस्तान और संयुक्त अमेरिकी प्रतिस्पर्धा”, (बिलली 1973), पृ. 231
मार्च 1975 में अफगानी राष्ट्रपति दादर ने दक्षिण एशिया में चीन तथा अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को शादीकूट किए जाने से उत्कीर्ण संकट को लेकर क्षेत्रीय सुरक्षा पर विचार-विद्वानों हेतु भारत सहित अन्य दक्षिण एशियाई देशों की सदस्यता यात्रा की, जिससे पड़ोसी देशों को परस्पर एक दूसरे के विचारों को जानने का मौका मिला।

वर्ष 1975 में भारत में हुई आपातकालीन घोषणा की अमेरिका, चीन व पाकिस्तान में निन्दा की गई। अमेरिका के विदेश उपसचिव श्री बारन क्रिस्टोफर ने कहा कि भारत को दक्षिण एशिया का नेतृत्व करना चाहिए, जिससे उसके आकार और प्रभुता का प्रतिविर्भ बढ़े। इसके प्रत्युत्तर में श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा कि अमेरिका को हिंदुस्तान की बिना में संयम तथा तनाव कम करने का प्रयास करना चाहिए। पाकिस्तान अपनी स्वतंत्रता गिरवी रखकर चीन, अमेरिका तथा क्षेत्रीय दुर्भाग रूप से शांति सहायता प्राप्त कर समृद्धि एशिया को अर्जित कर रहा है। 10 व्यापक न्याय को देखते हुए रूसी वास्तविक सोवियत को निर्धारित ने कहा कि दक्षिण एशिया में शांति व सुरक्षा के लिए एशियाई देश सामूहिक सुरक्षा जैसी कोई व्यवस्था करे। 31 सितम्बर 1977 में विदेश मंत्री श्री वाजपेयी की अफगानिस्तान यात्रा के दौरान दोनों देशों ने विचार व्यक्त किया कि 'वे दक्षिण एशियाई देशों से समान्य समझौते के साथ ही उनकी उन्नति व समृद्धि के लिए प्रयास करते रहेंगे।' 32 विदेश में दक्षिण एशिया में शांति व सहयोग का मार्ग प्रशस्त हो जाए तो हम सब जिन पर विचार का समान बोझ है, भारत साधनों को विनाश से हटाकर विकास में लगा सकते हैं।

अफगानिस्तान में लाल सेना को भौजूडगी का दक्षिण एशिया के रुप में माहील को बिगाड़ने में अहम स्थान रहा। 34 भारत पाकिस्तान सहित दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय संगठन की सभी सदस्य

29. रेस्टोर, जोन्स, "साउथ एशिया सक्रिय रोटी प्रावम्ब फिटर इन भी.एम.-डाउन", र हिन्दू (समाचार), 11 मार्च 1975, नवभारत दाइज़ल, 10 मार्च, 1975, हिन्दुस्तान दाइज़ल, 11 मार्च, दिनांक (नवीड़िया) 17 मार्च, 1975, एक और पाकिस्तान को सैन्य तैयारी से इस क्षेत्र में प्रशासक सीमान्त देश भारत व अफगानिस्तान के लिए पुढ़ जैसी मतभेद उपलब्ध हो रही थी, वही दूसरी ओर पाक राष्ट्रपति भुट्टो द्वारा आरोप-प्रतारोप लगाए जा रहे थे। ऐसी खातिर में संकट समाधान के लिए राष्ट्रपति दादर ने दक्षिण एशियाई देशों की माया की।
30. द टेंडरमैन (डिल्ली) 13 मार्च, 1975
31. हिन्दुस्तान दाइज़ल, 13 सितंबर, 1978
32. दिनांक (नवीड़िया) 14, अक्टूबर 23, 1977, प. 6-7
- दिनांक (नवीडिया) 27 सितंबर, 1978
33. भारतम, पीटरआर, "भारत की विदेश नीति" (1979), प. 206
34. हिपरिंग विश्व के सब कुछ की आर्थिक अभिवन्ध, डॉक्स ऑफ आर्थर-एडिडो-25-वीं विश्व संग्रह सम्मेलन, 26 सितंबर, 1979, सहायक सचिव हेनरील एंडो साउड्स द्वारा पूर्व और दक्षिण एशियाई सम्मेलन में जारी किए गए वित्तीय, प. 32-33
देशों ने इसे अस्वीकार तुरंत रूसी सेनाओं की वापसी का प्रस्ताव रखा। विनु भारत का मत था कि पाकिस्तान द्वारा भारी मात्रा में राष्ट्रों का संग्रह रूसी हस्तक्षेप से कम खतरनाक नहीं है। बेदखिलण एशिया में शान्ति के लिए गुटिनिपेश सिद्धांतों को स्वीकार करते हैं। अमेरिका का मत था कि जिन्हें राष्ट्र करने हमले के डर से अमेरिका से राष्ट्र सहयोग का प्रस्ताव कर रही है। अतः दिल्ली ने इस्लामाबाद को अपने सामान्य सम्बन्धों में मुखर कराना चाहिए। चीन ने भी उनकी इन नीतियों का समर्थन किया। इसलिए प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने कहा कि जब तक अमेरिका दख़लण एशिया में अपने निजी हितों से ऊपर उठकर बिस्मिल्लितता का प्रदर्शन नहीं करता, तब तक भारत उसे अधिक महत्व नहीं देगा। भारत को प्रतिस्पर्धा व कूटनीति के प्रयासों का केंद्र विनु दख़लण एशिया है; जबकि अमेरिका, पाकिस्तान को राष्ट्र सशस्त्र कर सीत वुद्ध को बढ़ावा देना चाहता है। उनके परचार प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने भी दख़लण एशिया में शान्ति का समर्थन कर इस क्षेत्र में परमाणु बमों के प्रयोग का विरोध किया। उनका मत था कि इस क्षेत्र में नए-नए हदियालों के आगमन से आतंक तथा भय व्याप्त हुआ है।

दख़लण एशिया में बढ़ते हुए शक्ति संबंध के कारण ही भारत अफ़गान संकट के प्रति प्रभावशाली भूमिका नहीं निभा सका था। वास्तव में यदि भारत इसमें सक्रिय रहता तो गतिविधियों की इस प्रक्रिया को ठोस में अहम्म भूमिका निभा सकता था, पर हमने दबी-छिपी नीति अपनाई और दख़लण एशिया में शान्ति होती व तनाव का माहौल बनने दिया। इसका प्रमुख कारण जहाँ भारत-रूस सम्बन्ध थे, वही दुसरा बड़ा कारण दख़लण एशिया की तत्कालीन स्थिति भी थी। भारत तथा अफ़गानिस्तान प्रारंभ से ही दख़लण एशिया में शान्ति के लिए पाकिस्तान से भिजवात सम्बन्धों को बनाए रखने के प्रयास करते रहे हैं। अतः पाकिस्तान सरकार को भी चाहिए कि वह अमेरिका व चीन की निर्भरता पर विस्तार न करके इस महाद्वीप में शान्ति व विकास के लिए भारत के साथ सहयोग करे।

35. स्टोफें, पी, कोपेन, “साउथ एशिया आफ्टर अफ़गानिस्तान” (बारिगटन 1985) प. 178, - बुद्ध, बिजयकेश, “इण्डियाज़ रिसर्च। ए द कैसिस इन अफ़गानिस्तान” जनरल ऑफ़ पॉलिटिकस, खण्ड 4, अंक 1, जनवरी-जून 1980, प. 4
36. एरियन रिकाउर्स, खण्ड 26, अंक 8, फरवरी 16-25, 1980, प. 15324-25
37. दिसंबर, एचडी गंगेल एचडी रिचर्ड एचडी एलिमन, “कलिंग एड द खेमर पास” फोरेन पॉलिसी, 1980, प. 17-18
38. रत्नाकर, “अफ़गानिस्तान अनसलन फुसर”(दिल्ली 1981) प. 77-78
39. प्रसाद, बिजल, “इण्डिया एड अफ़गान अफ़गानिस्तान” इंटरनेशनल रिडीजैन्स, खण्ड 4, अंक 19, अक्टूबर-दिसेंबर 1980, प. 635-41 भारत की सुराग स्थायी दख़लण एशिया की श्रीमती सुराग पर निर्भर करती है।
40. गांधी, जयेंद्र, “इण्डिया एड र गुडएंडएड जोनजायरन ऑफ़ कॉन्स कॉलेजियाइज”, प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की अमेरिका यात्रा के दौरान राष्ट्रीय प्रेस क्लब में प्रेसनेट, बारिगटन, 14 जून, 1985
41. व्यास, हरिसंकर, “भाई-भाई में करोबी और दोस्त की बिच्चा” जनसत्ताला, 14 दिसम्बर, 1987
दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग संगठन की स्थापना

दक्षिण एशिया हिन्द महासागर का प्रवेश द्वार है। यहाँ के देश अधिकांशः अपनी उन्नति, प्रगति व निरन्तर विकास के लिए बड़ी शक्तियों को प्राथमिक पद निर्धारित रहे हैं। इस निर्धारण का बड़ी शक्तियों ने सदैव अपने स्वार्थों के लिए प्रयोग किया। एशिया में हो रहे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन और संक्रमणकारी युग में दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग संगठन की आवश्यकता अनुभव की गई। जिससे इस क्षेत्र के देश पर स्वयं विश्वास व सहयोग को आधार पर एक दूसरे की आवश्यकताओं की पूर्ति में स्वयं सहयोग हो सके। पं । जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि भारत अपनी नौकरी के व भौगोलिक स्थिति के कारण सम्पूर्ण एशिया से इस प्रकार जुड़ा है कि किसी एशिया क्षेत्रीय संगठन के गठन में भारत के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। 42 यहीं कारण था कि दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग संगठन की स्थापना के प्रयासों में भारत की प्रमुख भूमिका रही।

1983 में दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग संगठन की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम उठाया गया। सात दक्षिण एशियाई देशों की विवेश मत्रियों की पहली बैठक अगस्त 1983 में नई दिल्ली में हुई। जिसमें एक चोटिया द्वारा दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग संगठन के व्यापक लक्ष्य एवं विभाग निर्धारित किए गए। 43 इस सहयोग संगठन में जिन देशों को सम्मिलित किया गया उनमें बंगालदेश, भूटान, भारत, मालदेव, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका थे। 27 फरवरी, 1984 को नई दिल्ली में दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग संगठन की बैठक के पहले सत्र का उद्घाटन करते हुए भारतीय विदेश मंत्री श्री पी वी नरसिंहराव ने कहा कि यह बैठक ऐसे समय हो रही है जब विश्व में बड़ी रही शस्त्र होंद से मानवता के स्वार्थ पर अपूर्व संकट छाया हुआ है, किन्तु हम शानित, मिलन तथा विकास चाहते हैं। पिछली आधी सदी से विश्व की अर्थव्यवस्था गम्भीर संकट में फंसी हुई है। इसमें इसका कारण भारत भी देश है। इसमें इसमें इस के कारण विवाहशील देशों को अन्तरराष्ट्रीय आर्थिक आत्मा पत्र की आवश्यकता है, जिससे उनका विकास व उन्नति के लिए नए साधन प्राप्त हो सके। हमारी समस्तीय तथा अभिलाषियां समान है। अतः हमारे लक्ष्यों की पूर्ति आत्मविश्वास से हम संगठन द्वारा ही पूर्ति की जा सकती है। इसलिए इन देशों में राजनैतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक समंदर स्थापित होना चाहिए। 44

किन्तु दक्षिण एशिया के विध्वंस रूप में गठन लभ्य प्रक्रिया के बाद हुआ। इंदिरा गांधी के

---

42. नेहरू, जवाहरलाल, देखिए क्र. 5
43. वार्षिक रिपोर्ट, 1983-84, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, प. 64
44. वहीं, खंड 30, अंक 2, फरवरी 1984, प. 71-74
रहते यह मामला औपचारिकताओं से आगे नहीं बढ़ा। प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी ने विचार को पनपने दिया मगर सहमति इसलिए नहीं दी क्योंकि भारत अपनी भूमिका के प्रति अनिवार्य था।

दूसरी ओर संगठन के छह देशों की सीमा से जुड़े जिस भारत की पहल पर इस संगठन की स्थापना हुई थी उसी के प्रति पड़ोसी देशों का रूपमा अविस्वास पूर्ण रहा। मनोवैज्ञानिक तौर पर यह स्पष्ट है कि बड़े संयुक्त पड़ोसी देश के प्रति ईमान की भावना अन्य देशों में व्यापक रहती है।

यद्यपि दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन से आशा व्यक्त की गई थी कि यह सहयोग के आधार पर सभी के लिए उपयोगी होगा, लेकिन इस सम्मलेन में अफगानिस्तान व बम्बा को नहीं मिलाया जाना उसके अधूरूपन को दर्शाता है। अफगानिस्तान सरकार प्राप्त इसका सदस्य बनने की इच्छा व्यक्त की जाती रही, किन्तु पाकिस्तान की कृत्रिमतिक पानिवर्धियां तथा कड़े विरोध के कारण ही अफगानिस्तान को इस संगठन का सदस्य नहीं बनाया जा सका।

प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग बढ़ाने की कोशिश प्रारंभ से ही रही। उनके सतत प्रारंभों के ब्रांडाली देशों के सहयोग से दिसम्बर 1985 में ब्रांडाली में दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (साक्ष) का विधिवत गठन हुआ। इस संगठन में सम्मिलित देशों ने संकल्प लिया कि वे पारस्परिक सहयोग करेंगे और अपने द्विपक्षीय मतभेदों के दर्शक को बैठक में नहीं रखेंगे। बैठक में सभी निर्णय एकमत से पारित किए जाएँगे। अब तक सभी दक्षिण सदस्य देशों के यहां बैठक हो चुकी है। जिससे सदस्य देशों में परस्पर आर्थिक सम्बन्धों में वृद्धि हुई है।

इस प्रकार यद्यपि दक्षिण प्रारंभ से ही उलझनों से घिरा रहा, तथापि उसके महत्व से इनकार नहीं किया जा सकता। यह दक्षिण एशिया के सात राष्ट्रों के बीच सम्बन्ध की एक मात्र कड़ी है। यदि पारस्परिक व्यवस्था और विरोधों को आड़े न आने दिया जाय तो यह संगठन इस क्षेत्र में आर्थिक सहयोग के संबंध तथा सामूहिक क्षेत्रीय नीति के निर्धारण में ऐतिहासिक भूमिका का निर्धार कर सकता है। दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय संगठन के दो मुख्य देश हैं (भारत-पाकिस्तान) न केवल अन्य देशों के साथ सहयोग तथा उन्नति में योगदान दे सकते हैं,

45. व्यास, हरि, "सात बड़ों के बीसों की हाल" जनसार, 19 नवम्बर, 1986
46. सिंह, हरि, "सात बड़ों के बीसों की हाल" जनसार, 19 नवम्बर, 1986
47. फारीन अंडर्सन रिकार्ड, खंड 30, अंक 9, सितम्बर 1984, पृ. 267, विदेश राज्यया स्टोरी अफ्रीका और द ग्रुप ऑफ 77, विदेश राज्यया स्टोरी अफ्रीका और द ग्रुप ऑफ 77, विदेश राज्यया स्टोरी 27 सितम्बर को न्यूयॉर्क से जारी किया गया विदेश राज्यया स्टोरी 27 सितम्बर को न्यूयॉर्क से जारी किया गया 1 मई, 1995
बल्कि वे इस क्षेत्र को बड़ी शक्तियों की क्षेत्रीय चालों से भी बचा सकते हैं।

किन्तु आज दक्षिण एशिया के साथ भारत के सम्बन्धों का कारण एक मुकाम पर जाकर उहर गया है। पाकिस्तान, नेपाल, बंगालदेश, श्रीलंका और यहाँ तक कि भूटान भी ‘सार्क’ की बैठकों के वावजूद भारत के विरुद्ध एक जुट हुआ दिखाई रहा है। हिंद महासागर शान्ति क्षेत्र, परमाणु अप्रसार, अफगानिस्तान, कम्प्यूटर आदि सवालों पर हमारे सारे पड़ोसी एक तरफ और हम दूसरी तरफ खड़े देखते हैं। अपनी मामलों में भी बराबर खीचतान और मनमुटार का महाहोल चल रहा है। क्षेत्रीय विरासत और पर्यटन समस्याओं के समाधान के लिए भारतीय प्रयासों की आवश्यकता है, तभी पड़ोसी देशों से अच्छे सम्बन्धों की आशा की जा सकती है।

विरासत को हो रहे परिवर्तन के इस दौरे में दक्षिण एशिया की राजनीति और क्षेत्रीय समीकरण नए आधार की तलाश में है। इसका प्रमुख उदाहरण रूस चीन सम्बन्ध है। दक्षिण एशिया में रूस चीन के परस्पर अमेरिका-चीन सम्बन्ध भी महत्वपूर्ण नहीं रहे। ऐसी स्थिति में दक्षिण एशिया में प्रमुख सहयोगी के रूप में भारत को चीन को साथ चीना विवाद खुलासा लेना चाहिए। अब चीन भी भारत को अपना प्रमुख शाखा नहीं मानता। इसलिए तलकलीन प्रधानमंत्री श्री नरसिंहराव ने कहा कि विश्व की एक तिहाई आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाले भारत और चीन विश्व में शान्ति और विकास के प्रति महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। यह दोनों देशों का फर्ज भी है। उन्होंने कहा कि भारत बदले हुए अन्तरराष्ट्रीय परिपथ पर अनुरुप अपने आपको ढालने और अपने राष्ट्रीय हितों को एक औजार के रूप में इस्तेमाल करने के लिए तत्काल है।

पाकिस्तान के अंतिमत दक्षिण एशिया में किसी अन्य देश के साथ भारत की आधारभूत समस्याएँ नहीं हैं। अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण भारत में कहा जाता है कि पड़ोसी देश नेपाल, श्रीलंका, बर्मा, भूटान, बंगालदेश और अफगानिस्तान आदि से कुछ खोकर भी मित्रता पूर्ण सम्बन्ध बनाने उसके लिए है। मलेशिया और सिंगापुर के साथ भारत के प्रचीन सम्बन्ध हैं। भारत एशिया देशों की प्रगति में रूचि रखता है, उसका मत है कि वह

49. गुप्ता, भावना सेन, "इंडो-पाक रिलेशन्स - अनरेटेड हार्", इंडिया टुडे, मई 16-31, खण्ड 9, अंक 10, 1984, पृ. 126-31
50. "बाते, बेंज प्रसार, "विदेश नीति-नीति है, मगर दिशा स्पष्ट नहीं", अर्थसंगीत, भाग 36, अंक 19, मई 12, 1985, पृ. 13
51. व्यस, हरिरिकर, देखि, क्र. 41
52. भक्ति, आराधना, "शक्तिसंगठन का या भूत बनाने की पूर्वार्थी", तन्वित्त टाइम्स, 6 मार्च, 1995
53. हिंदुस्तान, 21 दिसंबर, 1991
54. गुप्ता, भावना सेन, "देखि क्र. 19, पृ. 12
55. अर्थात्तर-राजन, देखि क्र. 5 पृ. 12
इस क्षेत्र में निवेदन सेवा करता है।

वास्तव में इसकी गोयवे सती की दौड़ में आगे रहने की सभी देशों की विवादित विश्व राजनीति में फेर बदल लाते रही है। भू-राजनीति की जगह भू-अर्थिक हालात ले रहे हैं। इसका प्रमुख उदाहरण दक्षिण एशिया जैसे क्षेत्र में भी सहयोग विपरिद काम करने लगी है। कारण आर्थिक मजबूतियां ही हैं। हमें एक ओर बदल रहे राजनीतिक समीकरणों का सामना करना है तो दूसरी ओर अपनी आर्थिक वरीयता के लिए भी कार्य करना है। वास्तव में, दक्षिण एशिया का सामरिक महानिल जितना कम महत्वपूर्ण होगा उतने अधिक विकास भारतीय विदेश नीति में होगे।

पाकिस्तान के साथ सम्बन्धों को सामान्य बनाना हमारे लिए कठिन चुनौती है। दक्षिण एशिया में शान्ति व स्थिरता के लिए इन सम्बन्धों की आवश्यकता है।

(ख) भारत का पड़ोसी अफगानिस्तान

भारत ने अपने पड़ोसी देशों के साथ किसी तरह का दुर्योग (मिठेश्वर) न कर उनके प्रति अपने सम्बन्धों में शान्ति, स्थिरता तथा विश्वास को निर्धारित किया है। यह उसकी विदेश नीति का मुख्य तत्त्व है।

स्वतंत्रता के समय भारत का पड़ोसी अफगानिस्तान उसके लिए नया नहीं था। दोनों ही देश इतिहास में समान रूप से भागीदार रहे तथा उन्हें चालित मित्रता रही थी। सीमाओं की समानता के कारण उनके मध्य राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक सम्बन्धों का सरित प्रवाह बहता रहा।

स्वतंत्रता के परमाणु अफगानिस्तान पहला देश था जिसने भारत के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित किए और प्राचीन काल से चली आ रही मित्रता को नया स्वरूप प्रदान किया गया।

भारत विभाजन के परमाणु उनके मध्य पाकिस्तान का जन्म हो जाने से यद्यपि भारत...
ब अफगानिस्तान का सीधा सम्बन्ध नहीं रहा, किन्तु परस्पर मित्रता जारी रही। वास्तव में, अफगानिस्तान भारत का ऐसा पद्धति है, जिसके साथ हमारे सम्बन्धों में किसी प्रकार की राजनीतिक कदम का प्रवेश कभी नहीं हुआ। आजादी के पहले अंग्रेज दोनों देशों के शानु थे। आजादी के बाद पाकिस्तान के जन्म तथा उसके साथ उत्पन्न हुए कारसी तथा पश्चिमल्युत विवाद ने भारत तथा अफगानिस्तान दोनों को एक दूसरे के निकट आने का नया आधार प्रदान किया। यद्यपि राष्ट्रीय हित को लेकर उन्होंने इन प्रस्तावों के एक दूसरे के प्रति पूर्ण समर्पण व्यक्त नहीं किया, किन्तु दोनों देश पाकिस्तान के विरोधी होने के नाते समयानुसार एक दूसरे की मांगों को जोचीत समर्थन प्रदान करते रहे।

अफगान सरकार तथा वहीं की जनता के साथ वित्तवाद स्मरण रखकर घर्षण सम्बन्धों के कारण ही भारत उनकी सुरक्षा, स्वतंत्रता, सीमाओं की रक्षा के लिए परस्पर विचार-विमर्श करता रहा है। दोनों ही देश गूढ निरंतरता व संयुक्त राष्ट्र के सिद्धांतों को स्वीकार करते हैं। वे अपने पड़ोसी देशों से मित्रता-पूर्ण सम्बन्धों के साथ ही उनकी स्वतंत्रता, राष्ट्रीय सुरक्षा व अहस्तक्षेप के प्रति वचनबद्ध है। पड़ोसी पाकिस्तान को गतिविधियों से प्रायः दोनों ही देश समस्त किये हैं। मार्च 1975 में राष्ट्रपति दादाल ने भारत यात्रा के दौरान विदेशमंत्री श्री बच्चन से बातचीत में कहा कि पाक राष्ट्रपति भुट्टो अमरीकी आयुध प्राप्त कर अफगानिस्तान के साथ सहयोग नहीं, तनाव बढ़ा रहा है। 64) जुलाई 1976 में प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी की काबूल यात्रा पर दोनों देशों ने चीन व पाकिस्तान सहित उपमहाद्वीप के सभी पड़ोसी देशों से अच्छे सम्बन्धों के लिए आशा व्यक्त की। 65) ब्रितानी गांधी ने कहा कि पड़ोसी देशों से भारत ने जो सम्बन्ध सुधार किया है, उसके मूल में किर्दिव के विरुद्ध कांग्रेसें की भावना नहीं है। उन्होंने स्पष्ट किया कि किसी देश से मैत्री दूसरे देश के मूल्य पर नहीं हो सकती। राष्ट्रपति दादाल ने उपमहाद्वीप में शान्ति व सीमाकांड के लिए उठाए गए भारतीय कदमों की प्रशंसा की।

जनता सरकार ने अपनी विदेश नीति में असंलग्नता के साथ ही सभी पड़ोसी देशों से

62. दास, प. पू.., "इंडो-अफगान टॉक ऑन कॉम्यन फैश", नार्थ इंडिया पत्रिका (झारखंड), 3 जून 1969, 38 वीं स्पेशल बाजार पत्रिका (अल्पकालिक), 9 मार्च, 1978
63. रत्नाख, पत्रिका, 18 जुलाई, 1978
64. डान (करणी), 20 मार्च, 1975, हिन्दू (स्पेशल), 5 मार्च, 1975, हिन्दुस्तान (पत्रिका), 5 मार्च, 1975.
65. फार्न अन्येवर सिकर्ड, खबर 22, अंडर 7, 1976, पू.. 195-200 - फिर, फिरत, "सीमाएं के बीते आधर से हटना सही नहीं।" प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी के राष्ट्रपति दादाल से आपसी मामलों पर बात, हिन्दुस्तान (पत्रिका), 6 जुलाई, 1976, 2 सिद्धांतकार (पत्रिका), 6 जुलाई, 1976, पैट्रोआ (पत्रिका), 9 जुलाई, 1976
66. 'भारत-अफगानिस्तान मित्रता के शायरे', नवभारत दयास (संथल पत्रिका), 9 जुलाई, 1976 - पैट्रोआ (पत्रिका), 9 जुलाई, 1976
मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों की स्थापना करने के लिए घोषणा की और कहा कि भारत अपने पड़ोसियों पर अपना प्रभुत्व नहीं चाहता। विदेशमन्त्री श्री वाजपेयी की काबूल यात्रा पर दोनों ही देशों ने दक्षिण एशियाई देशों के बीच अधिक विश्वास और मित्रता की भावना को सुधार करने के लिए मिलजुल कर कार्य करने का फैसला किया।69 श्री वाजपेयी ने कहा कि अभी साधनों का बहुत दबाव है फिर भी हम अपने पड़ोसी भिन्न देशों के आधुनिकितकरण की प्रक्रिया में यथा सम्भव सहायता के लिए तैयार हैं।69 दादर के नेतृत्व में एक रणनीति की स्थापना के पर्याप्त, नहीं। दोनों देशों के साथ-साथ भागीदारी आई, जहाँ दूसरी ओर दक्षिण एशियाई देशों के आपसी रिश्तों में भी मूलभूत परिवर्तन हो रहे थे। इसलिए, डा० वैदिक ने लिखा कि भारत सरकार को उपमहाद्वीप में सुरक्षा व स्थायित्वके लिए अफगानिस्तान के साथ ज्यादा से ज्यादा बड़ी शांति का कार्य करना पड़ा।।69 इस प्रकार प्राचीन काल से चतुर आ रही मित्रता को भाविक में बनाए रखने के लिए69 न केवल जनता सरकार ने, बल्कि उनके पूर्व पं जवाहरलाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, जाकिर हुसैन और श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अपने उल्लंघन-परिवर्तन पड़ोसी (अफगानिस्तान) से अच्छे सम्बन्ध बनाए रखते।71 भारत के समन्त ही अफगान विदेश-नीति का भी लक्ष्य रहा है कि पड़ोसी देशों के साथ अच्छे सातक्षर बनाए रखने से न केवल हमारे राष्ट्रीय संबंध सम्पादित होते हैं, अपितु इस क्षेत्र में शान्ति का वातावरण तैयार करने में मदद मिलती है। ईरान, चीन, भारत तथा रूस से इसी आधार पर अफगानिस्तान के सम्बन्ध हैं।

27 अप्रैल, 1978 को अफगानिस्तान में खलीकी क्रांति हुई। भारत ने पारस्परिक मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों के कारण न केवल उसे स्वीकार किया, बल्कि उसे पूर्ण समर्थन भी प्रदान किया। क्योंकि वह भारत का ऐसा पड़ोसी देश है जो जिश्व राजनीति में गुटनिरपेक्षता तथा साम्राज्यवादी शक्तियों के प्रति समान धर्म करता है।72 अपनी भारतीय स्थिति के कारण इस छोटे से देश (अफगानिस्तान) में महाशक्तियों उसके विकास कार्यों में सहयोग का बहाना लेकर अपने स्वर्णों के लिए कार्य करती रही है। पड़ोसी पाकिस्तान भी अफगानिस्तान में क्रांति विद्रोहियों की मदद कर देश में
अस्थिरता पैला रहा था। ऐसी स्थिति में दिसंबर 1979 में अफगानिस्तान में तत्कालीन सरकार ने अन्तरिक्ष संचार व विदेशी हस्तक्षेप से देश की सुरक्षा के लिए रूसी सैनिकों को आमंत्रित किया। किन्तु अमेरिकी अत्याचारिक अस्त्र-रास्तों की मदद से73 पाक गतिविधियों पहले से अधिक तीव्रता से जारी ही। इसलिए अफगान सरकार ने आरोप लगाया कि उनके देश के विरुद्ध आक्रमणकारी गतिविधियों से उसे बुझ भी प्राप्त नहीं होगा और स्वतंत्र राज्य के रूप में स्वंय उसकी अपनी प्रतिष्ठा गिर जाएगी। अपनी स्वतंत्रता को सुरक्षा बनाना तथा अपने सभी पहलों देशों के साथ अच्छे व मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखना स्वयं उसके तथा दक्षिण एशिया के जनगण की सुरक्षा व स्वतंत्रता दो हिद में है।74 अफगानिस्तान में तत्कालीन शीत युद्ध की लहर और आतंरिक व बाह्य सम्बन्धों में उत्पन्न संकट के चलते भी भारत-अफगानिस्तान के पारस्परिक सम्बन्धों में कोई अनर्थ नहीं आया।75 भारत अच्छा पहलों व भिन्न होने के तारे अफगानिस्तान में शान्ति व शिक्षात्मक प्रति अनुकूल विचार व्यक्त करता रहा है।76 अप्रैल 1980 में प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने कहा कि “हम भारतीय इस बात पर विचार रखते हैं कि भारत की सीमा पर कोई कमजोर पहलों न हो। हमारे पहलों आतंकी रूप से उसके विचारलोग से शिक्षित होने चाहिए।”77 प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने पाकिस्तान के साथ अपने सम्बन्धों के प्रति चिनता व्यक्त करते हुए कहा कि वह एक साथ दो बातें नहीं कर सकता, लड़ाई की तैयारी व युद्ध वर्जन की सन्धि।78 उसे प्राप्त हो रही आवश्यकता से अधिक सैन्य सहायता से कोई भी खतरा उत्पन्न हो सकता है।79 भारत एशिया में ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में शान्ति का समर्थक है। श्रीमती गांधी का यही मत था कि विश्व में रहते हुए हम किसी अन्य प्राचीन जागरण के लिए भी हर मानस को सम्मानित करते हैं, भिन्नता से सामंजस्य की हाजीता।
और फिर शानति स्थापित होती है। 79

नवम्बर 1984 में श्री राजीव गांधी प्रधानमंत्री बने। उनके नेतृत्व में पहली देशों के प्रति हमारी नीति बेहतर दिशा में बढ़ी। उनकी सरकार भी मित्र अफगानिस्तान की गुप्तिनिर्पेक्षता, स्वतंत्रता एवं अखण्डता का समान करते हुए वैमैनिक सम्बन्धों की पोषक रही। प्रधानमंत्री श्री गांधी ने कहा कि भारत के संबंधों के आत्मरक्षक मामलों में दंड को स्वीकार नहीं करता, साथ ही सहभागिता तथा गुप्तिनिर्पेक्षता हमारे सम्बन्धों के मार्गदर्शक सम्बन्ध हैं। 80 तत्पश्चात् भारत में स्थापित राष्ट्रीय मोर्चा सरकार अफगानिस्तान के प्रति प्रभावशाली भूमिका नहीं निभा सकी, किन्तु उसने पाकिस्तान के साथ सम्बन्धों में सुधार के व्यापक प्रयास किए।

संयुक्त राष्ट्र के वृद्धि अभियान के तहत फरवरी 1989 में अफगानिस्तान से रूसी सैनिकों को बाहर किया गया। जयवर्धन के नेतृत्व में अफगान सरकार ने देश में शानति के लिए व्यापक प्रयास किए। उनकी नीतियों को भारत ने समर्थन प्रदान किया। किन्तु पाकिस्तान और मुजाहिदों ने अग्निशमन में अनुभव की। इसी वजह से मुजाहिदों ने पाकिस्तान सरकार के खिलाफ लड़ाई जारी रखी। उनके विजयी अभियान तथा सत्ता पक्ष में पूर्व के कारण नजीबुद्दीन सरकार को लागत पत्र देना पड़ा। मुजाहिद राष्ट्र के संघ और बंदूकबाज़ बंदरगाह के बावजूद, मुजाहिद सरकार की स्थायीत्व किया गया। किन्तु उनमें परस्पर संघर्ष जारी रहा जिससे अन्यथा जन-जन की हानि हो रही है। संयुक्त राष्ट्र ने पुनः शान्तिपूर्ण व जनता द्वारा चुनी गई सरकार की स्थायीत्व के प्रयास किए, किन्तु वे असफल रहे। अफगानिस्तान में अंतिम विश्वास की स्थिति बनी हुई है। भारत का उत्तरदायित्व है कि वह स्थिति को विराजमान से रोके, ताकि वहाँ धार्मिक कटौती शासन पर हासिल न हो सके। वास्तव में, पिछले 14 वर्षों (रूसी हस्तक्षेप के पश्चात्) से भारत ने अन्तर्राष्ट्रीय रजनीति में अपनी नीतियों का समर्थन करने वाला एक भिन्न खो दिया है।

उपर्युक्त अध्ययन को आधार मानने हुए निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि विश्व राजनीति में दक्षिण एशिया का सदैव विशेष महत्त्व है। पूर्व सरकारों से लेकर वर्तमान नरसिंहाराय सरकार भी अपने दक्षिण एशियाई पहलों के निर्माण के प्रारंभ में समालोचना के एक भाग है। उपर्युक्त कारण है वैसे भी एशियाई, अफगानिस्तान, बुध, इस्लामिक व श्रीलंका के साथ-साथ पश्चिम एशिया व

79. प्रधानमंत्री के विचार-46, "विश्व शान्ति और पुरा", प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी का 22 जनवरी, 1982 का निम्नलिखित में मानव को रेतिकरी और विकास को समर्थन के लाभार्थ पर अंतर्राष्ट्रीय पुराण सम्मेलन में उद्धारण भाषण (भारत सरकार द्वारा आकलिता व प्रकाशित)

80. गांधी, राजीव, "मिलकर महान और नवजुल भारत बनाए", प्रधानमंत्री श्री गांधी का 22 नवम्बर, 1984 का राष्ट्र के नाम प्रसारित संदेश (भारत सरकार)
दक्षिण पूर्व एशिया के देशों के साथ भी सम्बन्ध भी सुधार हुआ है। सार्वजनिक बैठकों ने इन देशों
को परस्पर निकट लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। भारत ने पूर्व योगदान तथा कुराल नीतियों
द्वारा दक्षिण एशियाई राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्धारण किया, विश्व राजनीति में महान परिवर्तन हो रहे हैं, राष्ट्रों के मध्य राजनैतिक कठुता का स्थान पर आर्थिक
सहयोग ले रहे हैं। ऐतिहासिक स्थितियों में भारत को महत्व व्यक्त कि बह वस्तुतः एक ही परिवार
के हिस्से रहे पाकिस्तान से सामान्य सम्बन्ध बनाने का प्रयास करे, तभी दक्षिण एशिया में नवीन
राजनैतिक समीकरणों का उदय हो सकेगा। इस परिवर्तन से निश्चित ही अफगानिस्तान की स्थिति
में सुधार होगा। मित्र राष्ट्र अफगानिस्तान में लोकप्रि सरकार की स्थापना हो और पुनः प्राचीन
प्रगाढ़ सम्बन्धों को नवीनतम रूप दिया जाए, यही भारत की इच्छा व प्रयास है। हिन्द महासागर
में अमरीकी सैनिक उपस्थिति का दक्षिण एशिया में अपराध से अवरोध का महत्व बनाने में
प्रमुख स्थान रहा है। स्थिति में सुधार के लिए उसे अपने स्वार्थ की अपेक्षा क्षेत्र के विकास
की ओर उद्यान देना चाहिए। दूसरी ओर अफगानिस्तान में गृहयुद्ध समाप्त करने तथा स्थिर
व विकास सरकार को स्थापना में पाकिस्तान के साथ ही अमेरिका, चीन व रूस को भी अपना
योगदान देना होगा, तभी स्थिति में सुधार की आशा की जा सकती है।

*****